Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 20/February/2024 **IJRAW:** 2024; 3(3):47-49 **Accepted:** 19/March/2024

वर्तमान परिपेक्ष्य में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति व समस्याएं

***[1]डॉ. हरिकृष्ण**

*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, एम0एड0 बीकॉन इंस्टीटयूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के कई दशकों पश्चात् भी माध्यमिक शिक्षा की स्थिति असन्तोषजनक है। यद्यपि स्वतन्त्रता के तुरन्त पश्चात् माध्यमिक शिक्षा की समीक्षा के लिए तथा इसे देशवासियों की आकांक्षाओं के अनुरुप बनाने के लिए माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया गया। आयोग ने सुधार संबंधी कई सुझाव भी दिए परन्तु उनके क्रियान्वयन में कमी के कारण ये सुझाव सटीक ढंग से लागू नही हो पाए। इसके बाद कोठारी आयोग, शिक्षा नीति (1968,1986) ने भी कई सुझाव दिए किन्तु इन सबके बाद भी आज भी माध्यमिक शिक्षा में कई कमियाँ है जिनको दूर किया जाना आवश्यक हैं। इस अध्ययन द्वारा भारत में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति व इसमें उत्पन्न हुई समस्याओं का अध्ययन किया गया है साथ ही यह जानने का प्रयास किया गया है कि इन समस्याओं को कैसे दूर किया जाए।

मुख्य शब्दः निर्माण, भिन्न, निर्णय, प्राचीन, मध्यकाल, विभाजित, उत्तीर्ण, माध्यम, ईस्ट इण्डिया कम्पनी, अंतर्गत, प्रान्तों

प्रस्तावना

माध्यमिक शब्द का अर्थ है मध्य की माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। अंग्रेजी में इसके लिए सेकेण्डरी शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है दूसरे स्तर की, पहले स्तर प्राथमिक और उसके बाद दूसरे स्तर की यह माध्यमिक शिक्षा। आज किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी होती है, अपने में पूर्ण ईकाई होती है और बच्चों के निर्माण की शिक्षा होती है। परन्तु यह शिक्षा बच्चों की किस आयु से किस आयु तक अर्थात किस कक्षा से किसी कक्षा तक चलें और इसकी क्या पाठ्यचर्या हो, इस विषय में भिन्न–भिन्न देशों के भिन्न–भिन्न निर्णय है।

हमारे देश में प्राचीन और मध्यकाल में शिक्षा केवल दो स्तरों में विभाजित रही–प्राथमिक और उच्च। इस देश में प्राथमिक शिक्षा का प्रारम्भ आधुनिक युग में ईसाई मिश्नरियों ने किया। सर्वप्रथम तो उन्होनें यहाँ प्राथमिक विद्यालय खोलें, उसके बाद उन्होने प्राथमिक शिक्षा उत्तीर्ण बच्चों के लिए अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयें की स्थापना की। दूसरी तरफ ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भी अपने कर्मचारियों के लिए बच्चों की शिक्षा के लिए माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की परन्तु यह माध्यमिक शिक्षा आज की माध्यमिक शिक्षा से भिन्न थी। आज हमारे देश में प्रथम 8 वर्षीय शिक्षा (कक्षा 1 से कक्षा 8) प्राथमिक शिक्षा के अर्न्तगत आती है। आज प्रायः सभी प्रान्तों मे प्रथम 10 वर्षीय पाठ्यक्रम सब बच्चों के लिए समान है और + 2 पर वर्गीकरण है।

***Corresponding Author:** डॉ. हरिकृष्ण

भारत में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति

सारणी 1: 1950–51 से 1999–2000 तक विद्यालयों की संख्या

वर्ष	प्राथमिक	उच्च प्राथमिक	मध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक
1950 दृ 51	209671	13596	7416
1960 दृ 61	330399	49663	17329
1970 दृ 71	408378	90621	37051
1980 दृ 81	494503	118555	51573
1990 दृ 91	560935	151456	79796
1998 दृ 99	626737	190166	112438
1999–2000	641695	198004	116820

Source: MHRD, 2001

उपरोक्त सारणी द्वारा ज्ञात होता है कि प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या की तुलना में माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या काफी कम है।

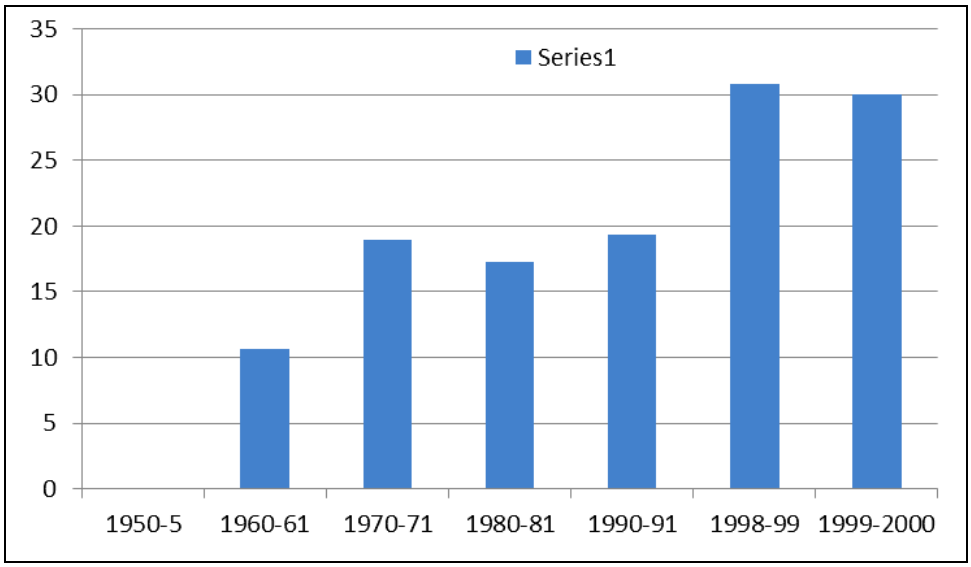

Source: Selected educational statistic: 1999-2000, MHRD, 2001

चित्र 1: 1950.51 से 1999.2000 तक सकल नामांकन प्रतिषत

सारणी 2: वार्षिक खर्च प्रति छात्र औसत 1995–96

मद	प्राथमिक स्तर	उच्च प्राथमिक स्तर	मध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर
शिक्षण शुल्क	100	124	197
अन्य शुल्क	39	64	106
पुस्तकें	67	153	272
स्टेशनरी	63	126	190
परिवहन	31	42	98
निजी कोचिगं	48	125	326
अन्य खर्च	25	45	74
परीक्षा शुल्क	11	24	66
वर्दी	118	212	248
कुल	501	915	1577

Source: NSSO, 1998

माध्यमिक शिक्षा की समस्याएँ

1. अवधि व ढाँचे सम्बन्धी समस्या
2. पाठ्यक्रम संबंधी समस्या
3. मूल्यांकन की समस्या
4. समानता की समस्या
5. पर्यवेक्षण व निरीक्षण की समस्या
6. शिक्षण विधियों की समस्या
7. व्यावसायीकरण की समस्या
8. गुणात्मक अध्यापक प्रशिक्षण की समस्या
9. सामुदायिक सामंजस्य की समस्या
10. विस्तार की समस्या
11. प्रबन्ध तथा नियोजन की समस्या
12. वित्तीय समस्या
13. माध्यमिक शिक्षा की उद्देश्यहीनता
14. दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली
15. नीजि विद्यालयों की अवांछित वृद्धि

16. अपव्यय तथा अवरोधन
17. गुणात्मक विकास की कमी
18. शिक्षकों की स्वाभिव्यक्ति की कमी
19. घरों में उचित वातावरण की कमी
20. जीवन के लिए अप्रायोगिक

उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक शिक्षा के विकास में कई अवरोधक है जिनके कारण माध्यमिक शिक्षा में कई समस्याएँ उत्पन्न हो गई है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए हमें उन अवरोधनों को दूर करना होगा जिनके कारण ये समस्याएँ उत्पन्न हुई है।

सुझाव

1. केन्द्र सरकार द्वारा जो भी शैक्षिक नीतियाँ नीतियाँ निश्चित की जाएँ, प्रान्तीय सरकारों को उनका अनुपालन करना चाहिए।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति सुस्पष्ट होनी चाहिए।
3. जन सहयोग राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुकूल ही लिया जाए।
4. शैक्षिक प्रशासन तन्त्र को मजबूत बनाना।
5. शिक्षा बजट में वृद्धि करना।
6. दीर्घ–कालिक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम की व्यवस्था की जाए।
7. शिक्षा का व्यावसायीकरण किया जाए।
8. शिक्षक शिक्षा को विद्यालय की बदलती मांगो के अनुकूल बनाया जाए।
9. सर्वशिक्षा अभियान की तर्ज पर माध्यमिक शिक्षा के लिए भी एक नया मिशन शुरु किए जाने पर विचार होना चाहिए।
10. दुर्गम क्षेत्रों में नये माध्यमिक विद्यालय खाले जाए।
11. पाठ्यक्रम सुधार और परीक्षा प्रणाली की समीक्षा के लिए तत्परतापूर्वक कदम उठाए जाए।
12. पिछड़े वर्गो के लिए शैक्षिक अवसरों की समानता की जाए।
13. आवश्यकतानुसार मुक्त विद्यालय खोले जाए।
14. ज़िला स्तर पर संसाधन या संदर्भ केन्द्र खोला जाए।
15. माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में भवनों, शिक्षकों तथा अन्य विद्यालयी सुविधाओं की कमी को पूरा किया जाए।
16. उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों में विषयों के चुनाव में लचीलापन प्रभावी बनाया जाए।
17. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की पहचान की जाए तथा उनके लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
18. कोर पाठ्यक्रम द्वारा माध्यमिक शिक्षा को मजबूत बनाया जाए।
19. सरकारी विद्यालयों के शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए छात्रों की आवश्यकतानुसार ठोस कदम उठाए जाए।

उद्देश्य

1. लोगों में शिक्षा के प्रति जागरुकता फैलाना
2. माध्यमिक शिक्षा की समस्याओं का उचित व व्यवस्थित उपाय ढूंढना
3. माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण पर बल देना
4. माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करना
5. माध्यमिक शिक्षा के गुणात्मक विकास पर बल देना।

निष्कर्ष

माध्यमिक शिक्षा की समस्यओं का प्रभाव बच्चों के भविष्य की शिक्षा पर नकारात्मक रुप में पड़ता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा सुझाए गए उपायों का भी कोई घहरा प्रभाव माध्यमिक शिक्षा की स्थिति में नही पड़ा। अतः आज हमें आवश्यकता है ऐसे उपायों को खोजना जिनसे माध्यमिक शिक्षा में विद्यमान कमियों को दूर कर इसकी समस्याओं के निवारण का हल निकाला जा सके तथा इसकी स्थिति को और बेहतर बनाया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ

1. लाल रमन बिहारी तथा कृष्ण कान्त शर्मा, "भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं,"आर.लाल. बुक डिपों, मेरठ, 2012
2. अग्रवाल जे.सी., "भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास," शिप्रा प्रकाशन, दिल्ली 2007
3. Lal Raman Bihari and Sinha g. N., "Development of Indian education and its problems". R. Lall book depot, Meerut, 2012.
4. लाल रमन बिहारी तथा सुनीता पलोड, "शिक्षा नीति की रुपरेखा एवं कार्यक्रम", आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2013।
5. Chandra S.S. Rawat V.S and Singh R.P. "Indian Education, development, Problems issues and trends," R. Lall book Depot, Meerut 2008.
6. Encyclopedia of status of Secondary, Education in IndiaS